

.267 Rs. 10.00

प्राण

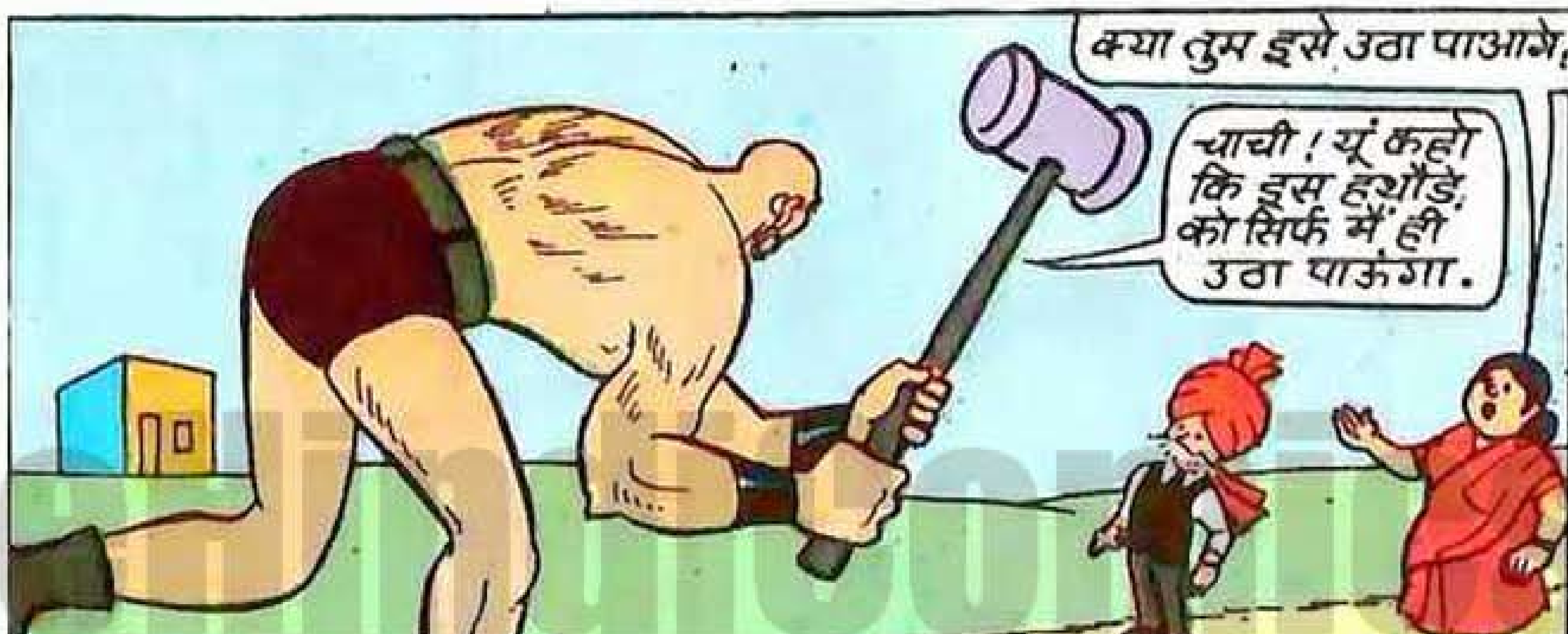
चाचा चौधरी और साबू का हथौड़ा


साबू का हथौड़ा


वाह चाची! आज काफी बढ़िया बनी हैं।
साबू! ज्यादा बात न बना. पहाड़ी से पत्थर ला कर घर के आगे वाली सड़क बना दे.

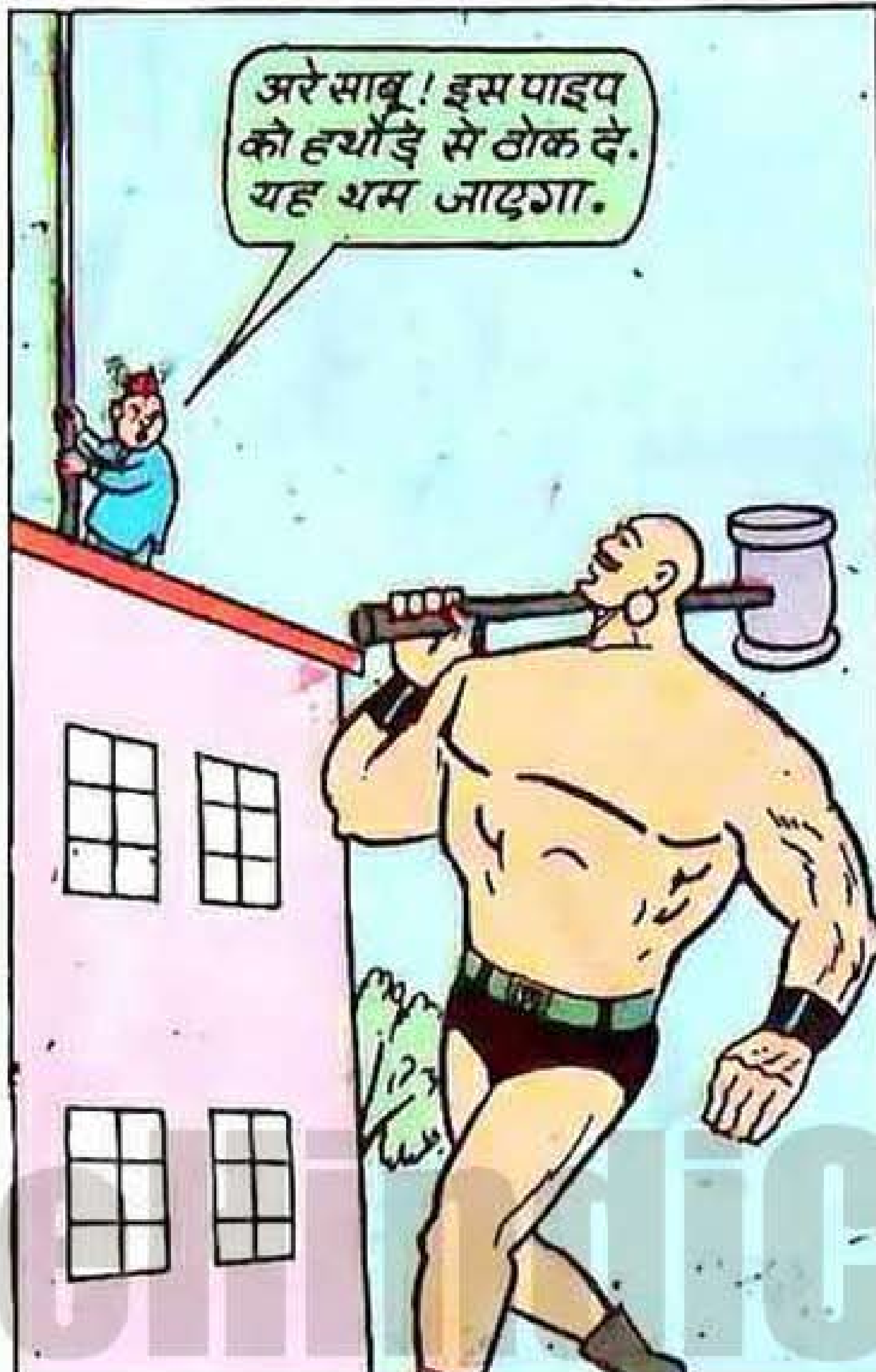

पर पहाड़ से पत्थर तोड़ने के लिए एक बड़ा हथौड़ा चाहिए!


वह मैं ले आया हूं.


क्या तुम इसे उठा पाओगे,
चाची! यूं कहो कि इस हथौड़े को सिर्फ मैं ही उठा पाऊंगा.


शहर के बाहर पहाड़ हैं.
वहां पत्थर तोड़कर इकट्ठे
कर देना, ट्रक में लाद लाएंगे.


इस इमारत पर झंडा
फहराने के लिए यह
पाइप लगाना है, पर
यह थम ही नहीं रहा.

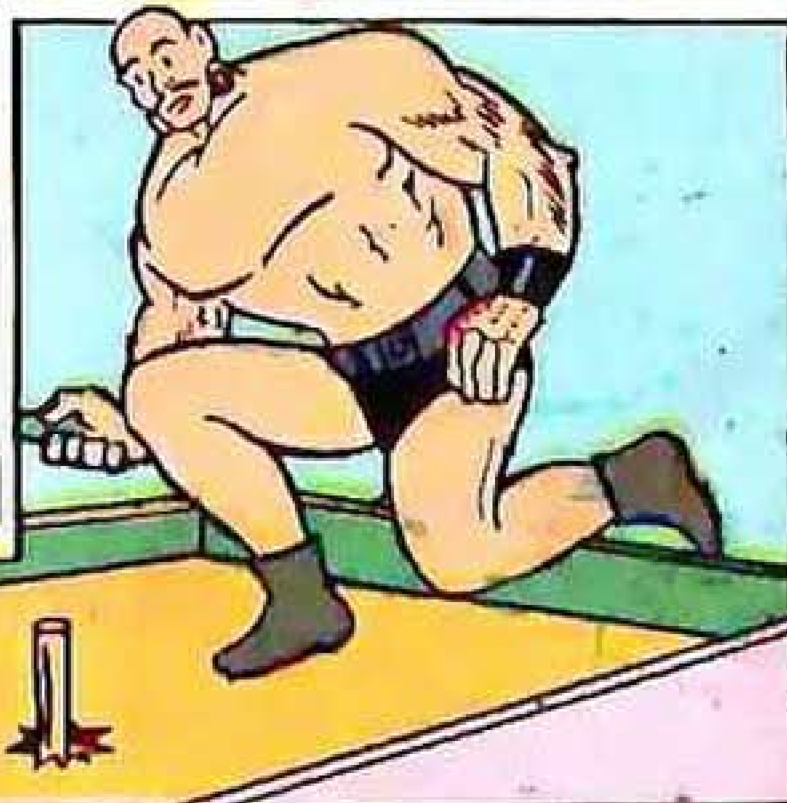

अरे साबू! इस पाइप
को हथौड़े से ठोक दे.
यह थम जाएगा.


नेताजी! इसे
ठोकने की बजाए
रस्सियों से
बांधो तो अच्छा
रहेगा.


अरे, रस्सियां कहां
ढूंढता फिरूं, साबू
इसे ठोक दे तो यह
पाइप आंधी तूफान
में हिलेगा भी नहीं.


नेताजी ! आप नहीं मानते तो लो, एक हाथ मार देता हूँ,


धड़ाक






?


आओ, आगे बढ़ें.


अरे साबू! एक उपकार का काम कर दे. अपने हथौड़े से इस बिजली के खम्बे को ठोक दे.
अरे! यह तो इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड के इंजीनियर सॉब हैं.


इंजीनियर सॉब! पहले झंडा लगाने के लिए छत पर एक पाइप को ठोका था, जो छत से आरपार होकर नीचे कमरे में चला गया. कहीं यहां भी फायदे की जगह नुकसान न हो जाए?


यहां तो कोई कमरा नहीं है. इस खम्बे को तो हमने जमीन पर ही गाड़ना है.


अच्छी बात है. साबू! जरा एक हाथ मार देना.


जय बजरंग बली !!


धड़ाक!


हैं ?? खम्बा कहां गया ?
जमीन के अंदर धंस गया !


पैट्रोलियम! चाचाजी! हमने तेल खोज निकाला!


चलो, अब आगे बढ़ें.


वह पहाड़ आ गया जहां से हमें पत्थर तोड़ना है.
अरे, भाई! पहाड़ से नीचे आ जाओ. हमें पत्थर तोड़ना है.


मैं नीचे नहीं उतरूंगा. तुम्हें पत्थर तोड़ना है, तोड़ लो.


ठीक है!
खटाक!


हे गंगा मइया! मेरा बिछड़ा बेटा मिला दो!


छपाक!


बेटा! तुम


बाबू! मैं तुम्हारी शुक्रगुज़ार हूं. तुमने मेरा खोया बेटा मिलवा दिया. यह नाराज हो कर घर से भाग गया था.

बोनज़ो के सितारे

चाचाजी ! बोनज़ो नामक किसी आदमी ने चिट्ठी लिखी है, जिसमें लिखा है कि हमारी किस्मत के सितारे आज गर्दिश में हैं.






साबू! कोई किसी की किस्मत न बना सकता हैं, न बिगाड़ सकता हैं.


तो फिर वह बौनजो कोई सरफिरा लगता हैं?


बिल्कुल! हमारी किस्मत हमारे हाथ में हैं.


नहीं! तुम्हारी किस्मत बौनजो के हाथ में हैं. दस हजार रुपए निकालकर जमीन पर रख दो, नहीं तो...


नहीं तो क्या?
मैं तुम्हारी खोपड़ी उड़ा दूंगा और सिद्ध कर दूंगा कि तुम्हारे सितारे सचमुच गर्दिश में थे.


चूहे! तूने यह कह कर अपनी किस्मत डूबो दी हैं.



लम्बू! मुझे
नीचे रख दो!



धड़ाक!



अस्पताल
लगता है आज मेरे
ही सितारे गर्दिश में
थे जो पहाड़ जैसे
आदमी से उलझ पड़ा.



गुलाम



ओह ! आज मैं देर तक सोता रहा. आज पंद्रह अगस्त हैं–आजादी का दिन, और मुझे लालकिले पर प्रधानमंत्री का भाषण सुनने जाना हैं.



अच्छा किया जो तुमने जल्दी से चाय दे दी. अब मैं चलता हूं.



चारों तरफ चहल पहल हैं.



क्यों भाई ? आज तो आजादी का दिन हैं. हर कोई छुट्टी मना रहा हैं. तुम क्यों पत्थर तोड़ रहे हो ? चलो, लालकिले चलें.


मैं कैसे जा सकता हूं ? मेरे पैरों में जंजीरें पड़ी हैं.
जंजीरें किसने डालीं ?


मैंने ! वह मजदूर मेरा गुलाम है .


लेकिन लाला बकबक ! गुलाम-प्रथा तो वर्षों पहले खत्म हो गई .


इस मजदूर के पिता ने मुझसे पांच सौ रुपए कर्ज लिए थे. जब तक वे नहीं चुकते, यह मेरा गुलाम रहेगा.


अगर कर्ज की रकम मैं चुका दूं तो ?
तो मैं इस गुलाम को आजाद कर दूंगा.


यह लो कागज और पैन. लिखो इकरारनामा .


यह आदमी कुछ बेवकूफ लगता है जो उसका कर्जा यूं ही चुका रहा है.


ओह! पैन तो गिर कर टूट गया!

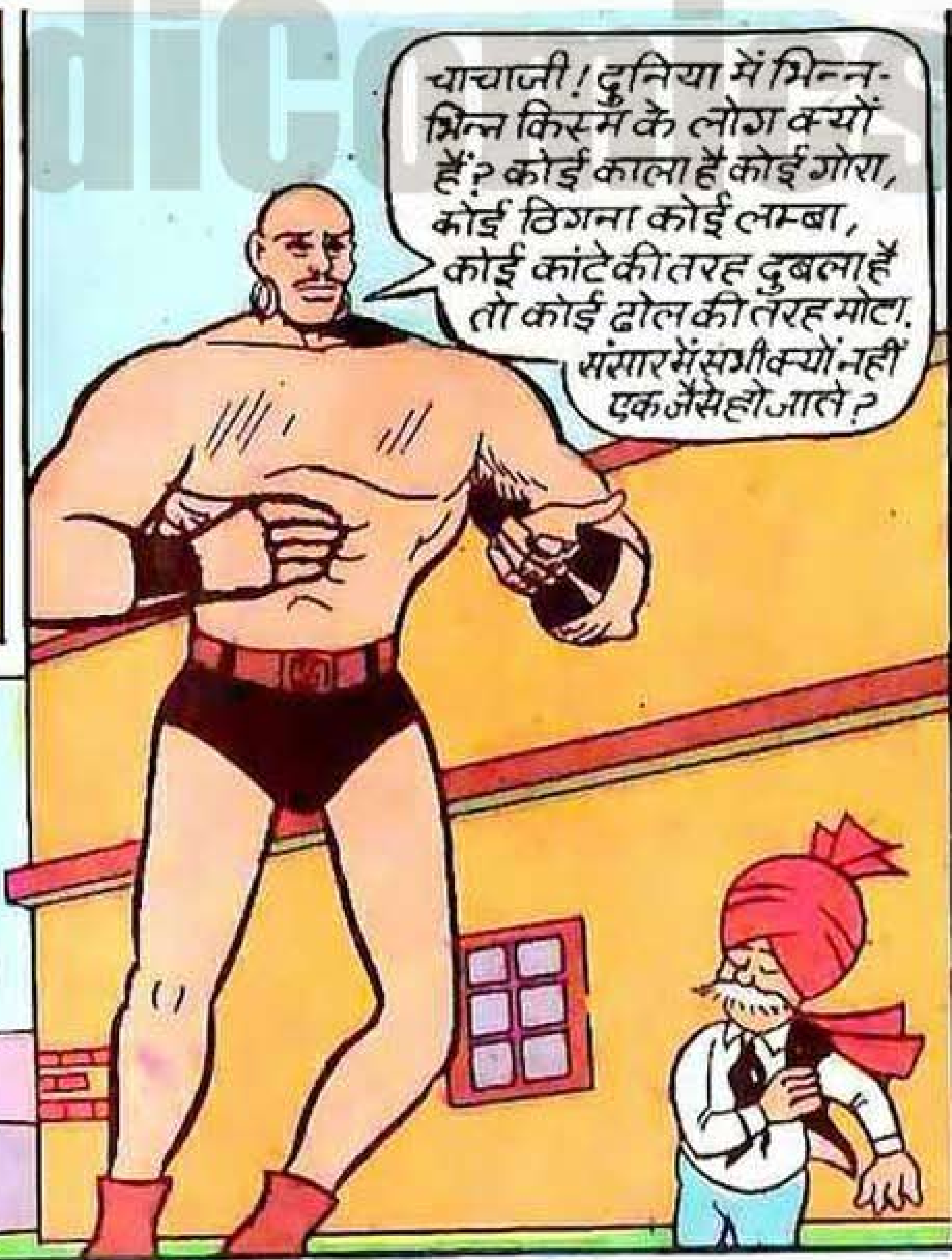

यह तुमने क्या किया? यह वह फाऊंटेन पैन था जिससे ब्रिटिश सरकार ने इकरारनामा लिख कर भारत को आजादी दी थी. यह ऐतेहासिक पैन लाखों रुपए का था.


लेकिन इतनी बड़ी रकम मैं नहीं चुका सकता.
तो फिर तुम्हें वर्षों मेरा गुलाम रह कर काम करना पड़ेगा!


रहम! मैं इस पैन के बदले उस मजदूर को रिहा कर देता हूं.
मंजूर है.


जल्दी चलो भाई! प्रधानमंत्री का भाषण शुरू होने वाला है.
लेकिन आप का वह कीमती पैन?
वह सवा रुपए का मामूली पैन था. बाजार से दूसरा खरीद लेंगे.


मिस्टर
रिंगो


चाचाजी! दुनिया में भिन्न-भिन्न किस्म के लोग क्यों हैं? कोई काला है कोई गोरा, कोई ठिगना कोई लम्बा, कोई कांटे की तरह दुबला है तो कोई ढोल की तरह मोटा. संसार में सभी क्यों नहीं एक जैसे हो जाते?


साबू! यह कुदरत का खेल है. आदमी पर उसकी जाति और प्रदेश का बड़ा असर पड़ता है.


और कुदरत ने जिसे जैसा बनाया है, वह उसी तरह अच्छा है.


अरे, भाषण ही देते रहोगे या मेरी तरफ भी ध्यान दोगे?


मैं रिंगो हूं. अपने कद के कारण मैं बहुत शर्मिंदा हूं.
क्यों?

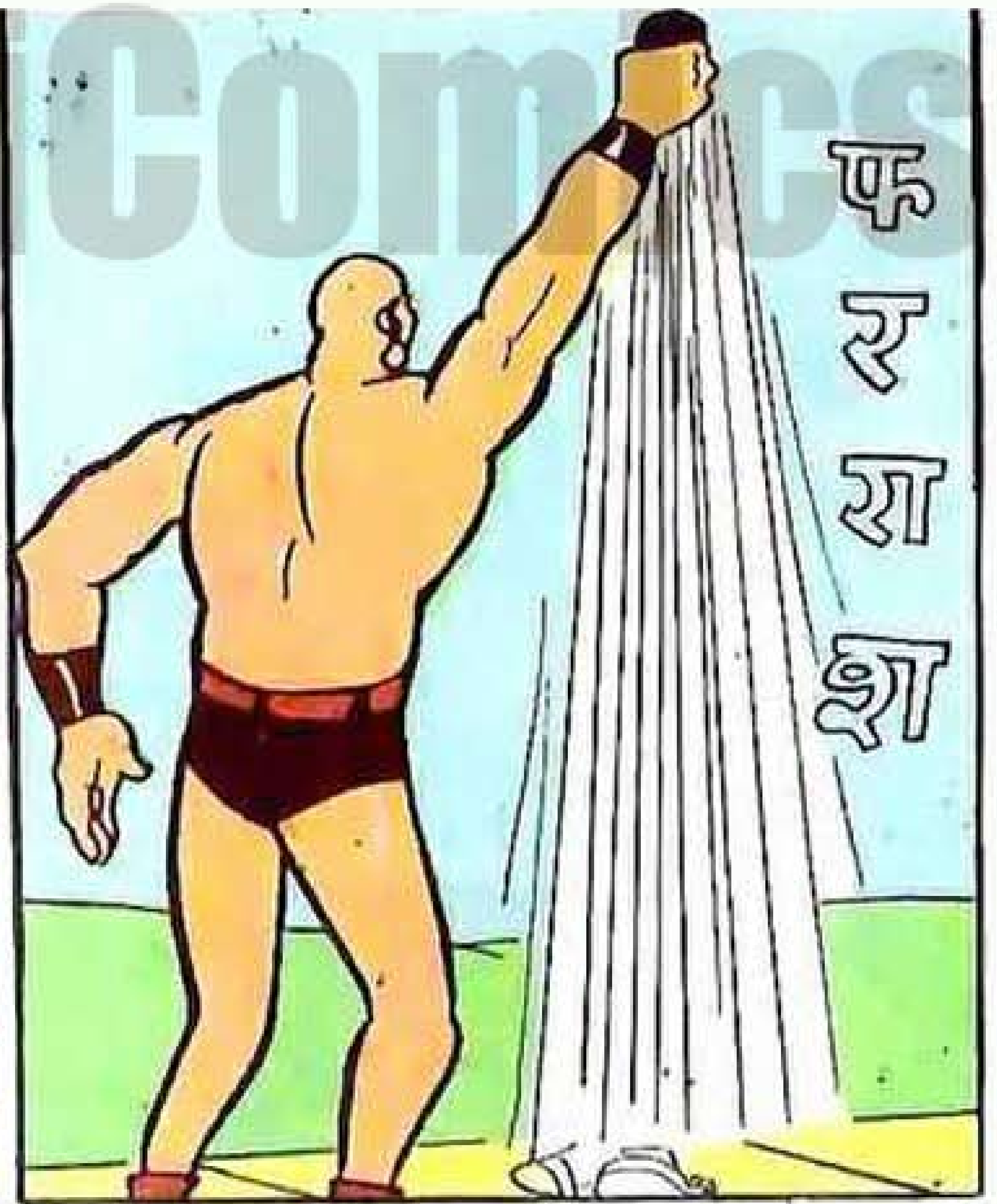

मैं शायद दुनिया का सबसे छोटा आदमी हूं. लोगों ने बताया है कि सिर्फ आप ही मेरा कद लम्बा कर सकते हैं.


पर ठिगनेपन में क्या बुराई है? तुम्हें कपड़ों पर कम खर्च करना पड़ेगा.
मगर मेरी शादी नहीं हो रही. इतने छोटे कद की लड़की दुनिया में कहां होगी?


ठीक है. मैं अंदर से लोहे की पत्तियां लाता हूं. तुम्हारे पैर जमीन पर फिक्स कर दिए जाएंगे. फिर साबू तुम्हें खींच कर लम्बा कर देगा.


मैंने पेच कस दिए हैं.
साबू! बाकी काम तुम्हारा है.


हां, तो मिस्टर रिंगो! मैं तुम्हें लम्बा करने जा रहा हूं. सांस रोक कर खड़े रहो.


फ र रा श


खुश! अब तो तुम्हारा सिर साबू से भी एक फुट ऊपर निकल गया!


मैं फिर कुंआरा रह जाऊंगा. शादी के लिए इतनी लम्बी लड़की कहां से मिलेगी?
लोग किसी हाल में भी खुश नहीं.


वाह! आज चाची ने मटर पुलाव बड़ा लाजवाब बनाया है.


तुम लोगों को सिर्फ खाने से ही काम है या कुछ कमाने की भी फिक्र है?
भागवान! पहले साबू को कुछ खा तो लेने दो.

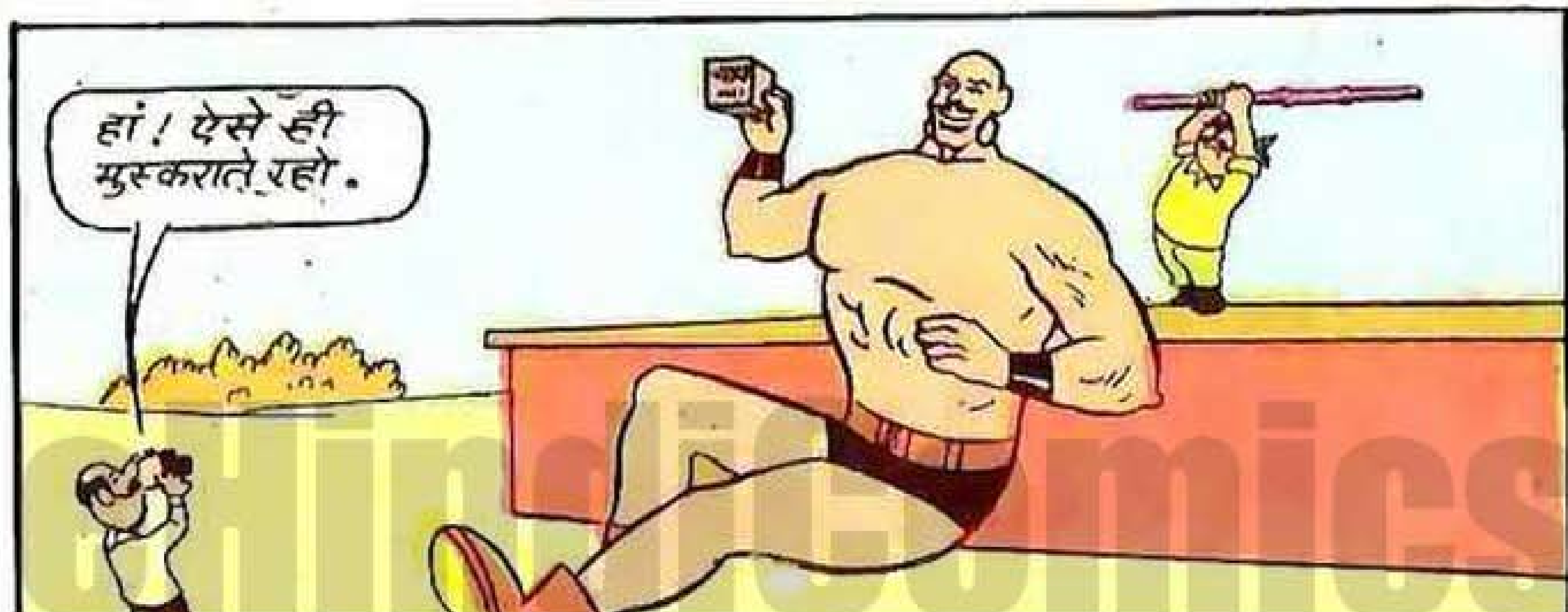

खा लो. मैं तो सिर्फ यह कहने आई थी कि अगर पैसों का प्रबंध न हुआ तो शाम को खाना नहीं मिलेगा. राशन का ड्रम बोल रहा है.
शाम से पहले ही हम कुछ न कुछ इंतजाम जरूर कर लेंगे.


चाचाजी! मैं जाता हूं. देखता हूं, कुछ काम मिल जाए.


शबरू! तुम्हारे चौखट का फोटो खींच लूं?
नहीं! कल साबू ने एक मुक्का मारा तो मैं झील में जा गिरा. जब तक उसका बदला न ले लूं, मुझे चैन नहीं.


देखो! वह आ रहा है.. तुम उसका फोटो खींचो, पीछे से मैं उसके सिर पर लट्ठ दे मारूंगा. हिसाब बराबर हो जाएगा.


साबू! एक चाय के विज्ञापन के लिए माडलिंग करोगे? पैसे मिलेंगे.
अगर पैसे मिलेंगे तो मैं तैयार हूं.


हां! ऐसे ही मुस्कराते रहो.


कड़ाक!
ओह!


लट्ठ टूट गया तो क्या हुआ? वह लोहे का बक्स दे मारता हूं.


साबू! एक शाट और!
हां! ठीक है.


धड़ाक!


वाह! यह बक्स तो करेंसी नोटों से भरा था.


लो चाचा जी! इन नोटों से पंद्रह दिन का राशन आ जाएगा!

काबि और चाचा चौधरी

साबू! वह मेरा आम का पेड़ है. तुम कितनी देर में उस पेड़ के सारे आम मुझे दे सकते हो?

एक मिनिट में.

लीजिए.

ओह! तुमने मेरा पेड़ जड़ से उखाड़ दिया!


मैंने सोचा एक एक आम तोड़ने से घंटों लग जाएंगे. इस तरह सारे आम एक साथ आपके पास आ जाएंगे.
चले आओ!


क्या जमाना आ गया है? भला करो, बुराई मिलती है.


ओह! बारिश शुरू हो गई


जब तक बारिश नहीं रुकती यह आश्रय ठीक है.


वाह! बाहर बारिश ने क्या समां बांधा है?


चाचा चौधरी ! मैंने बरसात पर एक कविता लिखी है. अंदर आकर सुनाऊं ?


अगर तुम इस खिड़की से अंदर आ सकते हो तो आ जाओ.


चाचा चौधरी भी लोगों को चक्कर में डालता रहता है. जब दरवाजा है तो फिर चोरों की तरह खिड़की से कूद कर क्यों अंदर घुसें ?


उफ़फ़ !
इसी लिए मैंने तुम्हें खिड़की के रास्ते अंदर आने को कहा था. मेरे दरवाजे के आगे खुला मेनहोल है.

छुपे रुस्तम

आओ साबू ! यह पैसा बैंक में जमा करा आएं.

क्या यह अपना है ?






यह जनाब छुपे रुस्तम हैं. जेब काटकर नौ दो ग्यारह हो जाते हैं और किसी ऐसी जगह छुपते हैं जहां कोई न ढूंढ सके.
एक बार गलती से मैंने मिनिस्टर की पाकेट मार दी--


--फिर क्या था शहर कोतवाली की सारी पुलिस मुझे ढूंढने में लग गई. मगर मैं उन्हें न मिला.
तो तुम कहां छुपे थे?
शहर की कोतवाली में. जब सारी पुलिस मेरी तलाश में सारे शहर में फैली पड़ी थी तो वही एक जगह ऐसी थी जहां पुलिस नहीं थी.


शाबाश! सचमुच तुम्हारे दिमाग की दाद देनी पड़ेगी. मुझे खबर मिली है कि चाचा चौधरी ढेर सारा रुपया बैग में रखकर बैंक को जा रहा है. मुझे वह बैग चाहिए.

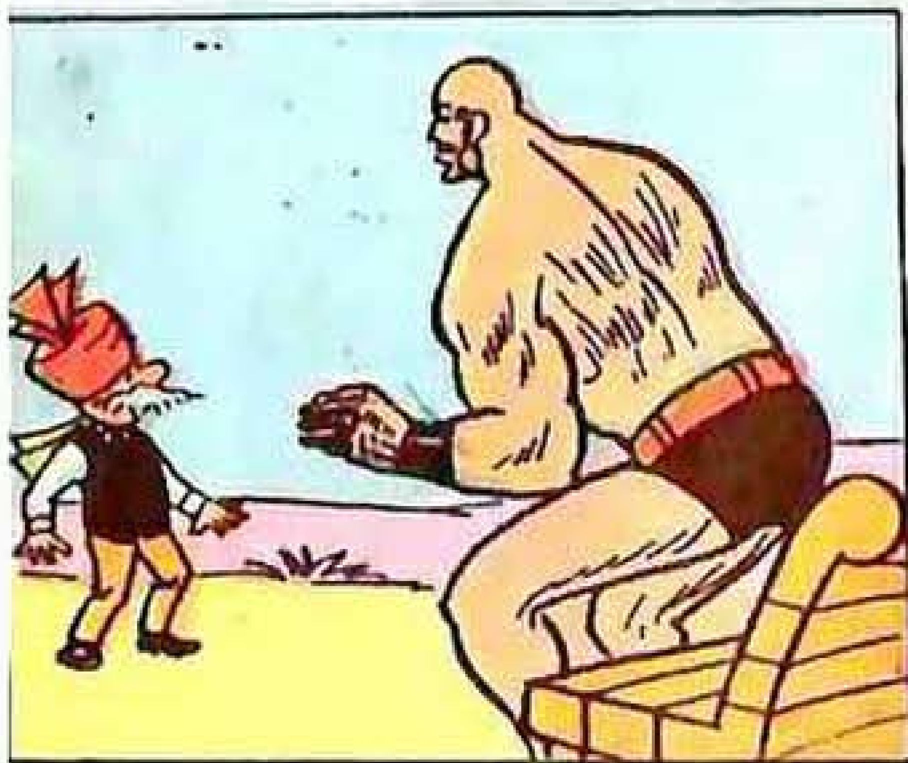

यह तो मेरे बाएं हाथ का काम है.

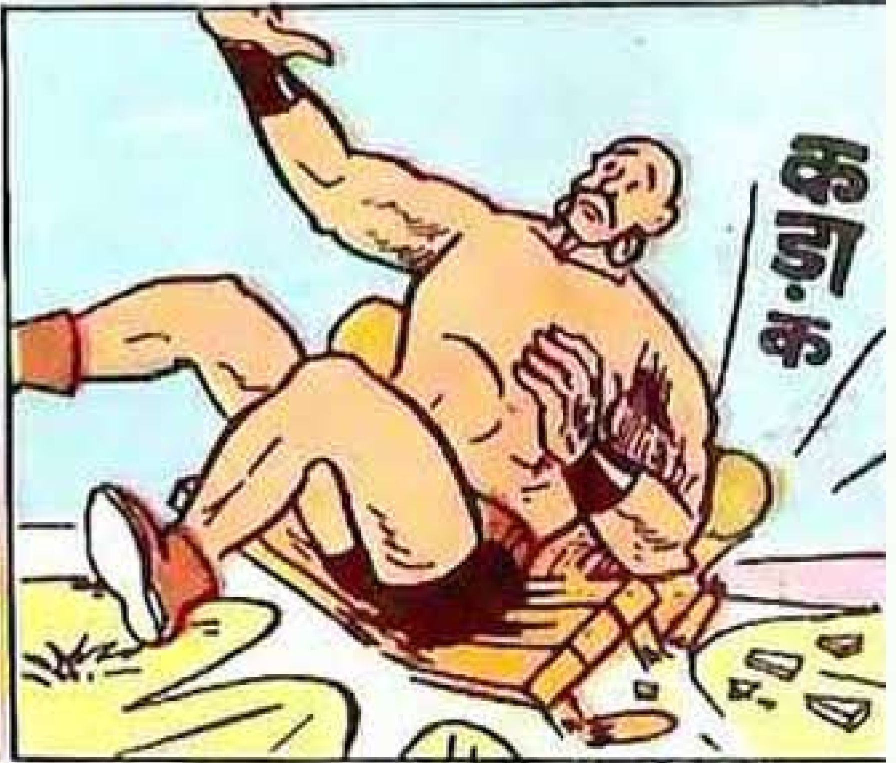

ओह बैग!


मैं अभी लाता हूं उस चूहे को पकड़ कर.


अरे कहाँ गायब हो गया वह?


इस ल ड़ी की बैंच पर बैठकर ठंडे दिमाग में सोचना चाहिए कि वह कहाँ छुप सकता है!




कड़ाक


ओह!
मैं इस बैंच के नीचे छुपा था!


छुपे रुस्तम तो बैंग की बजाए पट्टियों और प्लास्टर के साथ आ रहा है?


कलर टी.वी.


वाह! खूब!


ढक्कन और मक्खन. दो चोर--
ढक्कन! इस घर में टी.वी. हैं.


जहां हो, वहीं बैठे रहो.


ढक्कन! जाओ, टी.वी. उठा लो.


अरे भई! इस टी.वी. का तुम क्या करोगे?


क्यों ? क्या तुम्हें मनोरंजन का साधन नहीं चाहिए ? क्या चोर समाज का हिस्सा नहीं होते ? यह टी.वी. हम अपने छिपने के अड्डे पर लगाएंगे.


तो फिर अगर लेना ही है तो इस ब्लैक एंड व्हाइट का क्या करोगे ? क्यों नहीं कोई कलर टी.वी. लेते ?
वह कहां से मिलेगा ?


दरवाजे के बाहर एक इम्पोर्टेड कलर टी.वी. रखा है.


कहो मक्खन ? क्या मर्जी है ?
अगर कोई सैट हथियाना है तो क्यों न कलर टी.वी. हथियाया जाए ?


और फिर वह रखा भी दरवाजे के बाहर है.
आओ !


वाह! सचमुच यह कलर टी.वी. हमारे चोर अड्डे पर ठीक रहेगा. ढक्कन! इसे उठा कर ले चलो.


पहलवान! एक तरफ हो जाओ. मेरा मनचाहा प्रोग्राम आ रहा है.


क्यों न इस लम्बू की पहले बोलती बंद की जाए?
जितनी गोलियां इस रिवाल्वर में हैं, सारी इस लम्बू के पेट में उंडेल दो.


मच्छरों को भगाने के लिए हाथ चलाना ही पड़ता है.




ढक्कन! हम कहां हैं?
शहर के टी.वी. टावर पर.


इसमालिंग


इंस्पेक्टर डमडम
चाचा चौधरी का घर किधर है?


इंस्पेक्टर सॉब! सीधे चले जाइए-तीर की तरह. आप चाचा चौधरी के घर पहुंच जाएंगे.


लगता है इंस्पेक्टर चक्कर में है.
पुलिस तो दूसरों को चक्कर में डाल देती है?
लोग चाचा चौधरी के घर का पता तभी पूछते हैं जब वे मुसीबत में होते हैं.


चाचाजी! मेरी मदद कीजिए. मेरी नौकरी खतरे में है. एक बीवी और आठ बच्चों का भरणपोषण मुझ पर है.


चाचाजी ! मेरी ड्यूटी हवाई अड्डे पर है. एक स्मगलर विदेशी घड़ियां और सोने की बिस्किटें स्मगल कर रहा है लेकिन पकड़ा नहीं जा रहा. मेरे अफसर ने वार्निंग दी है कि अगर आज स्मगलर न पकड़ा गया तो नौकरी से मेरी छुट्टी.


स्मग्लिंग से तो देश की आर्थिक व्यवस्था को भी नुकसान पहुंचता है.


उसका पकड़ा जाना देश हित में है. आओ चलें.
मैं भी आऊं ?


नहीं साबू ! तुम यहीं रहो. इस काम में ताकत की नहीं अक्ल की जरूरत है.


विदेशी फ्लाइट आई और एअरपोर्ट पर पैसेंजर आने लगे.
CUSTOMS


बाबाजी! एक मिनट ठहरिए.
हमें परेशान न करो. तुम देख रहे हो हमारे पास कोई विदेशी माल नहीं है. यहां तक कि हमने कपड़े भी नहीं पहन रखे.


हम अमरीका से कुछ लेकर नहीं, देकर आए हैं. हम वहां के लोगों को योग और ध्यान की शिक्षा देकर लौटे हैं. जिससे वे माया का मोह छोड़कर शांति से जीना सीखें.
आप महान हैं.

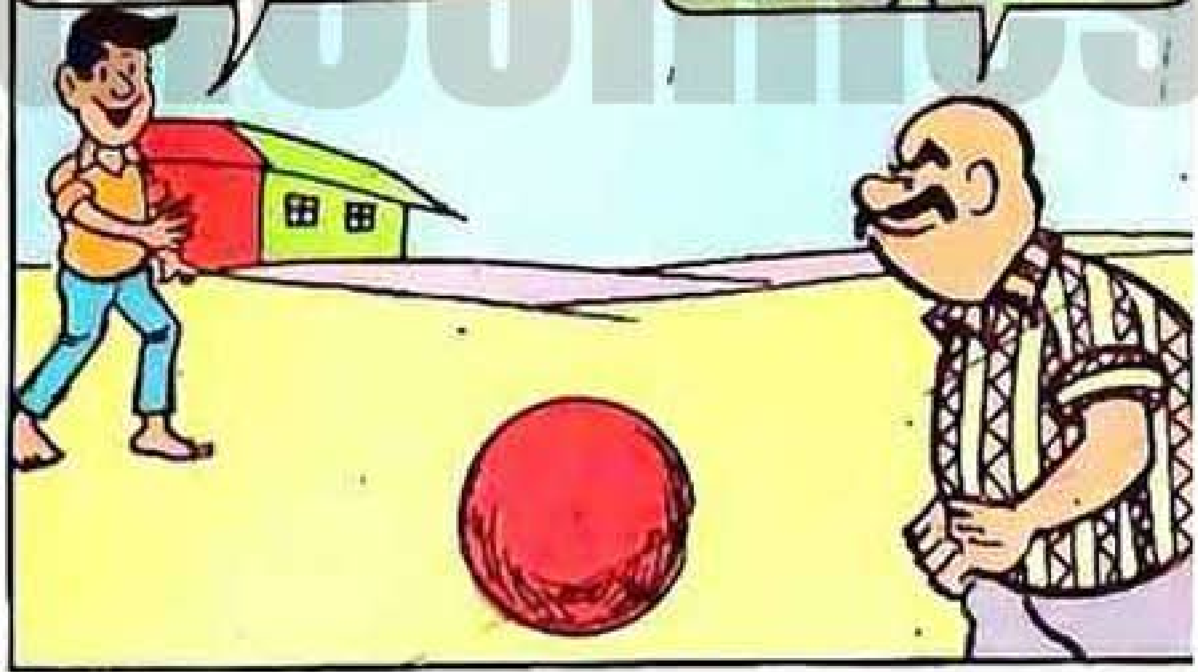

इसी बात पर मिलाइए हाथ!


?

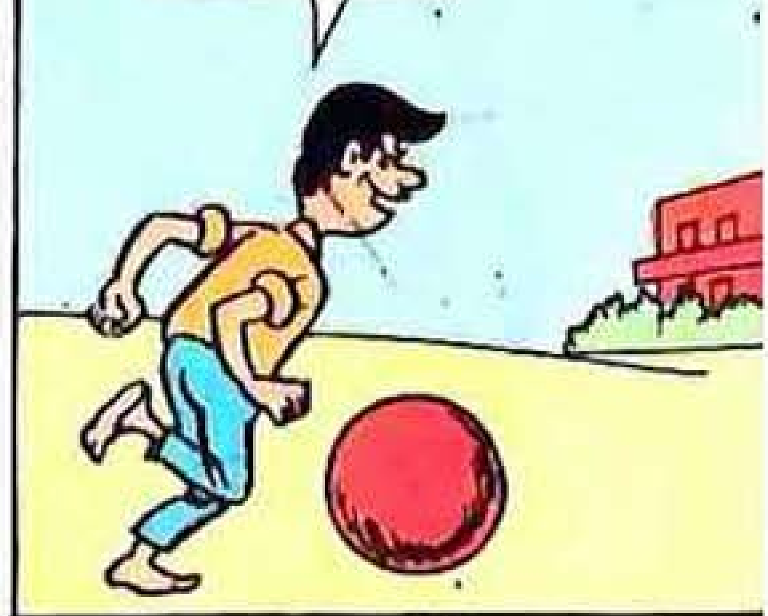

इंस्पेक्टर साब! इस प्लास्टिक के खोखले नकली हाथ के अंदर स्मगलड घड़ियां और सोने की बिस्किटें छिपाई गई थीं.


इस बाबा का हाथ बहुत साल पहले कट गया था. इस कटे हाथ का फायदा उठाने के लिए इसने हूबहू मिलता जुलता एक प्लास्टिक का हाथ बनवाया जिसमें माल स्मगल किया जा सके.
सचमुच आप के दिमाग के कोई सानी नहीं


वह फुटबाल


पटकू ! क्या अब तुम्हे फुटबाल खेलने का शौक चर्राया है ?
यह फुटबाल खेलने के लिए नहीं, तमाशा देखने के लिए है.


कैसा तमाशा ?
इसे एक जोर की किक जमाओ !


अभी लो !


किक!


आऊ ऊ !! मेरा पैर टूट गया !
हो-हो !! यह फुटबाल ठोस पत्थर की है.


अब देखना. मैं साबू से कहूंगा कि फुटबाल खेलो. जब वह इसे अपनी आदत के मुताबिक जोर से किक मारेगा, तो बस...


लो, साबू और चाचा चौधरी भी इधर ही आ रहे हैं.

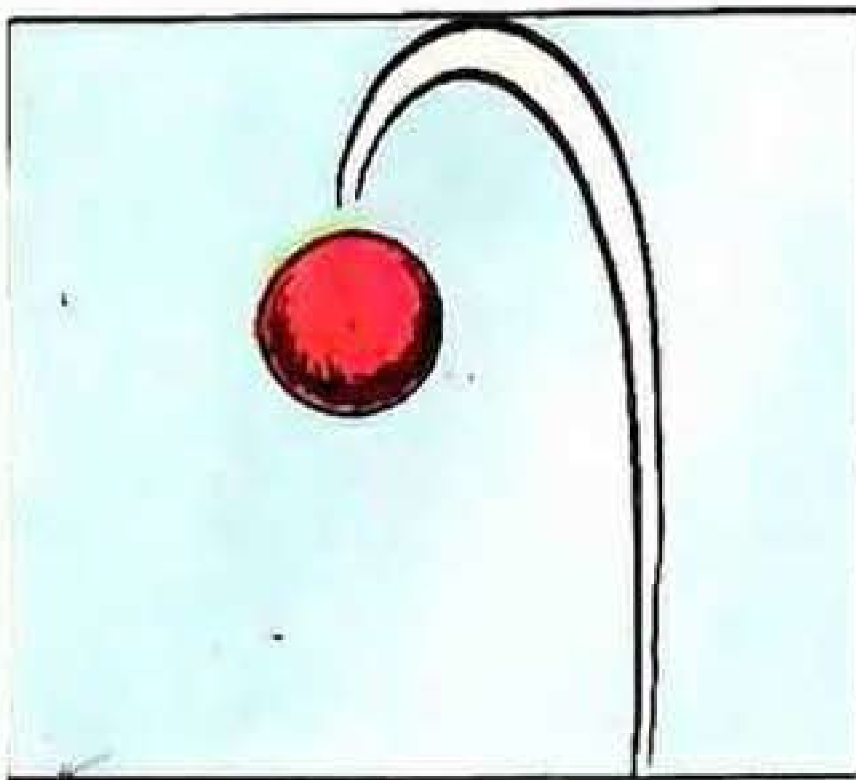

साबू! देखो तुम्हारे लिए मैं यह फुटबाल लाया हूं. जरा इसे अपने किस्म की किक जमाओ!


इससे फुटबाल नहीं, बास्केटबाल बेहतर खेला जा सकता है.


साबू! तुम्हें बास्केटबाल खेलने का शौक है न? देखें, तुम यह खेल कैसे खेलते हो!


पहले बाल को अपने कब्जे में किया .


फिर उसे बास्केट की तरफ यूं ऊंचे उछाल दिया .




धड़ाक


पटक! बाकी खेल फिर कभी .


गट्टू जेबकतरा


इंस्पैक्टर सॉब? कहिए, कैसे आना हुआ? बैठिए, चाय पीजिए.


चाचाजी! एक समस्या लेकर आया हूं. गट्टू जेबकतरा मेरी परेशानी बना हुआ है. बड़े-बड़ों की जेबें काट लेता है. एक बार तो एक मंत्री भी जेब कटा बैठा.


तो भई, उसको पकड़ लो.
कैसे? वह जेब काट कर आनन-फानन में गायब हो जाता है. पुलिस उसे तब पकड़े जब पता हो कि वह है कहां?


ठीक है. अपना कान इधर करो


मैं समझ गया!


ऐसा ही होगा .


गट्टू जेबकतरा.
गट्टू उस्ताद! यह जो आ रहा है न, चाचा चौधरी है. पता चला है कि इसने पुलिस से मिल कर तुम्हें पकड़ने का प्लान बनाया है.


यह मुझे क्या पकड़ेगा, मैं अभी इसीकी जेब काट देता हूं.


टक्कर!
माफ कीजिए, धक्का लग गया.


देखा! मैंने उसीका बटुआ पार कर दिया.
इसे जेब में ही रखो और पुलिस के आने से पहले ही उड़ चलो.


हम शहर से बाहर ऐसी जगह जाएंगे, जहां पुलिस को पता न चले.


पुलिस हैडक्वार्टर्स.
शहर का इलैक्ट्रॉनिक्स नक्शा बता रहा है कि गट्टू उत्तरी माल रोड पर जा रहा है.
CITY MAP


उत्तरी माल रोड की तरफ चलो, जल्दी!
POLICE


पुलिस? इसे कैसे पता चला कि, हम यहां हैं?


गट्टू! वह बटुआ जो तूने चाचा चौधरी की जेब से पार किया है, निकालो!
?


मेरे बटुए में एक छोटा सा ट्रांसमीटर था. इससे तुम जिधर जाते थे, पुलिस कंट्रोल में रखे इलेक्ट्रानिक्स नक्शे में अंकित होता जाता था.


साबू का चौका


चाचाजी! आओ क्रिकेट खेलें.


साबू! क्रिकेट तो खेलेंगे, लेकिन यहां नहीं, शहर से बाहर.


शहर में क्यों नहीं?


तुम्हारी बाल से जो खिड़कियों के शीशे टूटेंगे, उनका हरजाना मुझे भरना पड़ेगा.


क्रिकेट के लिए यह जगह उपयुक्त है. कोई मकान है नहीं, इसलिए कोई चीज टूटने का सवाल नहीं उठता.


स्टाक!


साबू! तुम्हारे साथ खेलने में एक मुसीबत है. लम्बी दौड़ें लगानी पड़ती हैं.


थोड़ी दूरी पर---
लाला! तुम्हारी रिहाई के लिए फिरौती का रुपया लाने के लिए मैंने जो वक्त दिया था वह खत्म हो गया. रुपया नहीं आया. मैं तुम्हें मारने जा रहा हूं.


धड़ाक!


अरे, यह तो बदनाम डाकू घड़गो है जो मशहूर उद्योगपति नगीन को उठा ले गया था.


धन्यवाद!
लाजी! धन्यवाद क्रिकेट की गेंद का करिए जिसने डाकू घड़गो की खोपड़ी तोड़ कर रख दी.


मैं पांच लाख रुपए का दान देता हूं, ताकि इस पैसे से भारत में विश्व कप क्रिकेट मैच कराया जाए.


बरसात में


चाचाजी! आओ, सिनेमा का टाइम हो गया है. अच्छी फिल्म लगी है.
मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं.
साबू, तुम्हारे बैठने के लिए सिनेमा हाल में कोई सीट नहीं है.
चाचाजी, मैं बाहर से फोटो देख कर ही आ जाऊंगा.


अरे भई, मौसम खराब है. कभी भी वर्षा आ सकती है. यह छतरी लेते जाओ.


अरी भागवान, छतरी को हम कहां उठाए फिरेंगे, इसे अपने पास ही रखो.


चलो, जल्दी चलो. हम इंडियन-न्यूज रिव्यू को छोड़ना नहीं चाहते.


लो चाचाजी, बारिश शुरू हो गई! छतरी हम लाए नहीं. अब क्या करें?
फिक्र मत करो,


साबू, जरा अपना हाथ नीचे करना.
अभी लो, चाचाजी.


देखा, अब हम बारिश से बचे रहेंगे.
वाह!


अरे चाचाजी! देखो, साबू का सिर कहां गायब हो गया?


वाह! देखो, कुदरत के नजारे! ऊपर सूरज की सुनहरी धूप और नीचे मूसलाधार बारिश.
उसका सिर बादलों से ऊपर निकल गया हैं.


बारिश अधिक हो गई है. अब हमें साबू के करीब नहीं रहना चाहिए.
अरे चाचाजी! आप तो यूं ही परेशान हो रहे हैं. साबू हमें बारिश से बचाता हुआ ले जाएगा.



चलो भाई साबू! हमें बचाते हुए जरा सिनेमा हाल तक ले चलो.
अच्छी बात है.
आप मेरे हाथ के नीचे नीचे चलो.
वाह! मजा आ गया.
तभी कीचड़ में साबू का पैर फिसलता है.
ओह!
दीपू, बचो!
बाप रे! हम साबू के नीचे दब गए.
मैंने तुम्हें कहा था न कि अब साबू के करीब खड़ा होना मुनासिब नहीं.
अरे भाई साबू, उठो.
ओह! मेरा कंधा!
हाय मेरी कमर! सिनेमा को मारो गोली. चलो, अब जल्दी चाची से चूना लगवाएं.


डाकू
बब्बरसिंह


डाकू बब्बरसिंह अपने गिरोह के साथ जा रहा है.
क्यों रे सांभा! सरकार ने हमारे सिर पर कितना इनाम रखा है?


हजूर पचास हजार! पर हम आपका नाम डुबो कर नहीं आए. हमने रामपुर गाँव की सारी आबादी को पेड़ों पर उल्टा टांग कर गोलियों से भून दिया और दो लाख रूपए की नकदी व जेवर लूट कर अपने साथ लाए हैं
शाबाश!


वे तो फिल्मी डाकू थे जो अपने सरदार का नाम डुबो आए, हम तो असली हैं. अरे सांभा, तू एकाएक कांपने क्यों लगा?
वह देखो सरदार... सामने.


यह पेड़ काट कर घर जल्दी जाना चाहिए.


क्यों रे, तू इस चूहे से डरता है? लानत है तेरे पर! तूने बब्बरसिंह का नाम डुबो दिया मैं अभी उसे गोली से भून डालता हूं.


सरदार! वह मामूली आदमी नहीं, वह चाचा चौधरी है जिसने आज तक किसी से मात नहीं खाई.


ठाँय
खामोश!


बंदूक की आवाज? यह डाकू बब्बरसिंह अपने साथियों के साथ आ रहा है. उनके पास बंदूकें हैं, उनसे अकेला मुकाबला न कर सकूंगा. कोई ट्रिक लड़ानी होगी.


हा-हा! देखो, वह भागा जा रहा है चूहा! तुम इसी से इतना डर रहे थे?
सरदार! तुम नहीं जानते वह छोटा सा आदमी...


खामोश! इस चूहे का पीछा करते हैं. हम उसे हमेशा के लिए खतम कर देंगे.


जल्दी से यह पुल पार कर लूं. वे डाकू भी मेरे पीछे आ रहे हैं. जैसा मैं चाहता था, वैसा ही हुआ.


जब बब्बरसिंह और उसके सारे साथी पुल के बीचों बीच आ गए ...
बस, एक ही वार में यह रस्सी कट कर अलग हो जाएगी


और रस्सी के कटते ही.
ओह! यह क्या हो गया?
बचाओ!
हाय! मैं मरा!


अरे सांभा! तू सच कहता था, चाचा चौधरी ने किसी से आज तक मात नहीं खाई.
अब जाकर चैन से लकड़ी काटूंगा